

- 35 कंजलकं केशरं
 36 संवर्तिका तु स्याद्वं दलम् ।
 37 करहाटः शिफा च स्यात्कन्दे सलिलजन्मनाम् ॥ ११६६ ॥
 38 उत्पलानां तु शालूकं
 39 नील्यां शैवालशेवले ।
 40 शेवालं शैवलं शेपालं जलाचूकनीलिके ॥ ११६७ ॥
 41 धान्यं तु सस्यं सीत्यं च व्रीहिः स्तम्बकरिश्च तद् ।
 42 आशुः स्यात्पाटलो व्रीहि-
 43 गर्भाकी तु षष्टिकः ॥ ११६८ ॥
 44 शालयः कलमाद्याः स्युः
 45 कलमस्तु कलामकः ।
 46 लोहितो रक्तशालिः स्या-
 47 ब्रह्मशालिः सुगन्धिकः ॥ ११६९ ॥
 48 यवो ह्यप्रियस्तीक्ष्णाशूक-
 49 स्तोकास्त्वसौ हरित् ।
 50 मङ्गल्यको मसूरः स्या-

35. Die Staubfäden einer Lotusblume (2 W.). — 36. Das junge Blatt eines Lotus. — 37. Die Wurzel eines Lotus (2 W.). — 38. Die Wurzel der zur Nacht blühenden Nymphaeen. — 39. 40. *Valisneria octandra* (8 W.). — 41. Getreide (im weitesten Sinne) (5 W.). — 42. Reis, der in der Regenzeit reift (3 W.). — 43. Reis, der in 60 Tagen reift (2 W.). — 44. Reis, der unter Wasser wächst (45—47). — 45. Reis, der im Mai — Juni gesäet und im December — Januar reif wird (2 W.). — 46. Rother Reis, *Oriza sativa*. — 47. Wohlriechender Reis (2 W.). — 48. Gerste (3 W.). — 49. Grüne oder unreife Gerste. — 50. *Cicer lens* (2 W.).